Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

आधुनिक शिक्षा और छात्रों का गिरता स्तर

Dr. R. S. Mishra

Professor, AKS University Satna (M.P.)

सारांश (Abstract)*

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने छात्रों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाया है, लेकिन इसके दुष्परिणामों में नैतिकता, अनुशासन, एकाग्रता और मूल्यों का क्षरण भी देखने को मिल रहा है। यह शोध विशेष रूप से सतना ज़िले के संदर्भ में छात्रों की शैक्षिक गुणवत्ता और व्यवहारिक गिरावट का विश्लेषण करता है।

1. प्रस्तावना

21वीं सदी में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक बदल गया है। तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), स्मार्ट क्लासरूम और ऑनलाइन शिक्षण ने शिक्षा को एक नई दिशा दी है। हालांकि, यह परिवर्तन जितना तेज़ और आकर्षक है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। आधुनिक शिक्षा प्रणाली जहाँ ज्ञान को सुलभ बना रही है, वहीं छात्रों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और बौद्धिक विकास में गिरावट की प्रवृत्ति भी देखने को मिल रही है।

यह शोध-पत्र विशेषतः **मध्यप्रदेश के सतना ज़िले** की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि को आधार बनाकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली के प्रभाव, छात्रों के गिरते स्तर, उसके कारणों तथा सुधारात्मक उपायों का विश्लेषण करता है।

* 21वीं सदी में शिक्षा प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन

* डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट क्लासरूम, ऑनलाइन लर्निंग

* मूल प्रश्न: क्या तकनीकी प्रगति छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक है?

2. शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य-

* छात्र अनुशासन, मूल्य-बोध, व्यवहार और संज्ञानात्मक कौशल में गिरावट

* उद्देश्य: आधुनिक शिक्षा प्रणाली के प्रभावों का मूल्यांकन

* क्षेत्रीय अध्ययन: सतना ज़िले के विद्यालयों में छात्रों की स्थिति का विश्लेषण.

3.शोध विधि (Research Methodology) वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक

नमूना*: सतना ज़िले के 10 विद्यालयों के कक्षा 9-12 के 200 छात्र

4.डेटा विश्लेषण: *

1. सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग (75%) – छात्रों का अधिकांश समय पढ़ाई के बजाय सोशल मीडिया पर व्यतीत हो रहा है, जिससे ध्यान भटकता है।

2. नैतिक शिक्षा का अनुभव न होना (60%) – छात्रों को मूल्य शिक्षा नहीं दी जा रही, जिससे व्यवहार में गिरावट देखी जा रही है।

3. ज्ञान का आत्मसात न होना (65%) – डिजिटल शिक्षण से सूचना तो मिल रही है, लेकिन गहन समझ और आत्मसात की प्रक्रिया कमजोर है।

4. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में रुचि में कमी (55%) – केवल अकादमिक प्रदर्शन पर ज़ोर होने से रचनात्मक और सामाजिक विकास बाधित हो रहा है।

5. अनुशासन और एकाग्रता में गिरावट (70%) – शिक्षकों की राय के अनुसार छात्रों में आत्मनियंत्रण की कमी देखी गई है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली: विशेषताएँ और यथार्थ

आधुनिक शिक्षा की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

(क) तकनीक-आधारित शिक्षण

शिक्षा अब किताबों तक सीमित नहीं है। स्मार्टफोन, टैबलेट, प्रोजेक्टर, और इंटरनेट के माध्यम से बच्चे घर बैठे उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। सतना जिले में शहरी विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम की सुविधा उपलब्ध है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में यह सुविधा सीमित है।

(ख) ई-लर्निंग और ऑनलाइन कक्षाएँ

COVID-19 के बाद ऑनलाइन कक्षाओं का चलन बढ़ा। BYJU'S, Unacademy, Zoom, Google Classroom जैसे प्लेटफॉर्म शिक्षा का नया माध्यम बने। शहरी क्षेत्र के छात्र इससे लाभान्वित हुए, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी के कारण बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हुई।

(ग) छात्र-केंद्रित शिक्षण

अब पढ़ाई शिक्षक-केंद्रित न होकर छात्र-केंद्रित हो गई है। बच्चों को अपनी गति से सीखने की स्वतंत्रता है। सतना के निजी स्कूलों में यह प्रणाली आंशिक रूप से लागू है, पर सरकारी स्कूलों में यह अभी भी सीमित है।

छात्रों का गिरता स्तर: स्वरूप और कारण

(क) शारीरिक स्तर

- **शारीरिक निष्क्रियता:** लंबे समय तक स्क्रीन पर रहने से बच्चों की दिनचर्या निष्क्रिय होती जा रही है। खेल-कूद और बाह्य गतिविधियों में गिरावट स्पष्ट है।
- **स्वास्थ्य समस्याएँ:** आंखों की कमजोरी, मोटापा, पीठ दर्द जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।
- **संतुलित पोषण की कमी:** सतना के ग्रामीण क्षेत्रों में malnutrition एक बड़ी समस्या है।

(ख) मानसिक स्तर

- **मानसिक तनाव:** अंकों और करियर की चिंता ने छात्रों को मानसिक रूप से कमजोर किया है।
- **अवसाद और आत्महत्या की प्रवृत्ति:** NCRB के अनुसार 2021 में मध्यप्रदेश में 1,308 छात्रों ने आत्महत्या की, जो अत्यधिक चिंताजनक है।
- **सामाजिक अलगाव:** डिजिटल माध्यमों ने बच्चों को परिवार और समाज से दूर कर दिया है।

(ग) नैतिक स्तर

- **नैतिक शिक्षा का अभाव:** आधुनिक पाठ्यक्रम में नैतिकता, संयम, आदरभाव जैसे मूल्यों की कमी है।
- **शिक्षक-छात्र संबंधों में गिरावट:** डिजिटल माध्यमों के कारण मानवीय संवाद कम हुआ है।
- **सामाजिक जिम्मेदारी में कमी:** सामाजिक सेवा और दायित्व का बोध घटता जा रहा है।

(घ) शैक्षिक स्तर

- **रटंत प्रणाली का प्रभाव:** छात्रों में केवल परीक्षा पास करने की प्रवृत्ति विकसित हो रही है।
- **मूल कौशल की कमी:** सतना में ASER 2019 के अनुसार कक्षा 3 के केवल 38.4% छात्र ही कक्षा 1 का पाठ पढ़ सकते हैं।
- **NIPUN भारत मिशन:** कक्षा 3 तक मूलभूत साक्षरता का लक्ष्य केवल 20% ही पूरा हो पाया है।

आधुनिक शिक्षा के लाभ: संतुलित दृष्टिकोण

(क) तकनीकी दक्षता में वृद्धि

छात्र अब कम उम्र से ही टेक्नोलॉजी का प्रयोग सीख रहे हैं, जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सहायक है।

(ख) जानकारी की सुलभता

इंटरनेट के माध्यम से किसी भी विषय की जानकारी कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाती है।

(ग) दूरस्थ शिक्षा का विस्तार

अब सतना जैसे जिलों के दूरदराज़ क्षेत्रों के बच्चे भी उच्च गुणवत्ता की शिक्षा तक पहुँच पा रहे हैं।

(घ) कौशल विकास के अवसर

ऑनलाइन कोर्स और वेबिनार के माध्यम से छात्रों में सोचने, नेतृत्व करने और संवाद करने की क्षमता विकसित हो रही है।

Satna जिले की विशेष स्थिति: सामाजिक और शैक्षणिक:

- **जनसंख्या:** 22.3 लाख (2011), ग्रामीण: 78.7%, शहरी: 21.3%
- **साक्षरता दर:** कुल – 72.26%, पुरुष – 81.37%, महिला – 62.45%
- **ASER रिपोर्ट:** कक्षा 1 के 44.4% छात्र अक्षर तक नहीं पहचानते।

शिक्षा में विषमता:

- शहरी क्षेत्रों में तकनीकी संसाधन उपलब्ध, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में न के बराबर।
- सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की कमी और संसाधनों की अपर्याप्तता।

केन्द्रीय विद्यालयों का प्रदर्शन:

KVS और JNV में 96–100% परिणाम, जिससे तकनीकी संसाधनों की महत्ता सिद्ध होती है।

समाधान और सुझाव-

(क) प्राथमिक शिक्षा को सुदृढ़ बनाना

- कक्षा 1–3 में भाषा और गणित पर विशेष ध्यान।
- शिक्षकों की नियमित प्रशिक्षण व्यवस्था।

(ख) नैतिक एवं जीवन मूल्य आधारित शिक्षा

- पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान, सामाजिक सेवा जैसे विषय अनिवार्य किए जाएँ।
- बच्चों को "अच्छा मनुष्य" बनने की दिशा में प्रेरित करना।

(ग) व्यावहारिक एवं प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण

- “सीखकर करना” (Learning by Doing) की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करें।
- विद्यालयों में प्रयोगशालाएँ, कार्यशालाएँ और टीम प्रोजेक्ट्स पर बल दिया जाए।

(घ) मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान

- प्रत्येक विद्यालय में प्रशिक्षित काउंसलर नियुक्त किया जाए।
- अभिभावकों और शिक्षकों के बीच नियमित संवाद हो।

(ङ) शिक्षक को 'गुरु' की भूमिका में लाना

- शिक्षक केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि मूल्य और दृष्टिकोण भी दें।
- छात्र-शिक्षक के बीच संवाद, आत्मीयता और मार्गदर्शन को बढ़ावा मिले।

(च) डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता: ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को डिजिटल उपकरण व इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराना आवश्यक है।

(छ) सामाजिक सेवा और सामुदायिक जुड़ाव: बच्चों को पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता अभियान, वृद्धाश्रम सेवा आदि में शामिल करना चाहिए।

मुख्य निष्कर्ष (Findings)- 75% छात्र सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं

* 60% छात्रों को नैतिक शिक्षा का कोई अनुभव नहीं

* डिजिटल क्लास से सूचना तो मिल रही है, लेकिन आत्मसात की कमी

* शारीरिक शिक्षा व सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में रुचि में गिरावट

* शिक्षकों के अनुसार छात्रों में आत्मनियंत्रण, अनुशासन और एकाग्रता में कमी

चिंताजनक पहलू- मूल्य शिक्षा का अभाव

* माता-पिता और शिक्षकों की संवादहीनता

* शिक्षा का व्यवसायीकरण – केवल परीक्षा केंद्रित प्रणाली

8. निष्कर्ष (Conclusion)**शिक्षा केवल तकनीकी दक्षता नहीं, बल्कि भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास का माध्यम होनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा प्रणाली को तकनीक और मानवता के संतुलन की ओर पुनर्निर्देशित करना आवश्यक है।

7. निष्कर्ष:आधुनिक शिक्षा ने निश्चित रूप से ज्ञान की पहुँच को आसान और वैश्विक बनाया है। लेकिन इसकी तकनीक-केंद्रित संरचना ने छात्रों के जीवन के अन्य आयामों – जैसे नैतिकता, मानसिक संतुलन, सामाजिकता और व्यावहारिकता – को प्रभावित किया है। **सतना जिले** में यह विरोधाभास और भी गहरा है, जहाँ एक ओर केन्द्रीय विद्यालयों का उत्कृष्ट प्रदर्शन है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता तक संकट में है।आज आवश्यकता है कि हम शिक्षा को केवल 'डिग्री प्राप्ति' का माध्यम न मानें, बल्कि 'मनुष्य निर्माण' का पवित्र

कार्य समझें। अगर शिक्षा जीवन निर्माण में सहायक हो, तो तकनीक भी आशीर्वाद सिद्ध होगी। नहीं तो, यह केवल एक निष्क्रिय, मूल्यहीन, और मानसिक रूप से अस्थिर पीढ़ी तैयार करेगी।

संदर्भ:

1. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**, भारत सरकार
2. **ASER रिपोर्ट 2019** – ग्रामीण शिक्षा की स्थिति
3. **NCRB रिपोर्ट 2021** – छात्र आत्महत्या के आँकड़े
4. **UNICEF India Report (2023)** – डिजिटल शिक्षा का बच्चों पर प्रभाव
5. **CBSE और MPBSE परीक्षा परिणाम विश्लेषण 2023–25**
6. **स्थानीय समाचार पत्र (दैनिक भास्कर, पत्रिका, हिंदुस्तान टाइम्स**